International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 25-09-2020; Accepted: 05-10-2020; Published: 26-10-2020
www.hindijournal.com
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 140-142

जयशंकर प्रसाद के काव्य में राष्ट्र जागरण के स्वर

कुमारी वाग्वी [1], प्रिंस कुमार [2]
[1, 2] छात्रा, बी.एड.–एम.एड., शिक्षा विभाग, साई नाथ विश्वविद्यालय, राँची, झारखंड, भारत

सारांश
छायावादी कविताओं का कालखंड ठीक उस समय का है जब देश में राष्ट्रीय आंदोलन का दौर चल रहा था । इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता थे – गाँधी, नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि। यद्यपि साहित्य में प्रायः तत्कालीन समाज की अभिव्यक्ति होती है तथापि यह दुर्भाग्य का ही विषय था कि छायावादी कवियों एवं रचनाकारों पर पलायनवादिता के गंभीर आरोप लगाए गए। यह सत्य है कि छायावादी कविताओं में वायवीय कल्पनाओं का चित्रण हुआ है परंतु इन कविताओं का जब हम तत्कालीन परिवेश को आधार बनाकर एवं सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो इन कविताओं में राष्ट्रीय जागरण का जो स्वर देखने को मिलता है वह अपने आप में अद्वितीय हैं। छायावादी कवियों में सबसे प्रमुख एवं वरिष्ठ कवि हैं जयशंकर प्रसाद। अतः उनपर यह जिम्मेदारी और भी अधिक थी जिससे यह कहा जा सके कि छायावादी कवियों की रचनाएँ भी राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत थी एवं तत्कालीन संघर्ष में साहित्यकारों का भी सहयोग आंदोलनकारियों तथा स्वतंत्रता के आकांक्षियों को मिल रहा था।

मूल शब्द: राष्ट्रीय जागरण, राष्ट्रीय चेतना, राष्ट्रीय आंदोलन, स्वतंत्रता

प्रस्तावना
छायावादी कविताओं का कालखंड ठीक उस समय का है जब देश में राष्ट्रीय आंदोलन का दौर चल रहा था । इस आंदोलन के नेतृत्वकर्ता थे – गाँधी, नेहरू, सुभाष चंद्र बोस, भगत सिंह, चंद्रशेखर आजाद आदि। यद्यपि साहित्य में प्रायः तत्कालीन समाज की अभिव्यक्ति होती है तथापि यह दुर्भाग्य का ही विषय था कि छायावादी कवियों एवं रचनाकारों पर पलायनवादिता के गंभीर आरोप लगाए गए। यह सत्य है कि छायावादी कविताओं में वायवीय कल्पनाओं का चित्रण हुआ है परंतु इन कविताओं का जब हम तत्कालीन परिवेश को आधार बनाकर एवं सूक्ष्म दृष्टि से अध्ययन करते हैं तो इन कविताओं में राष्ट्रीय जागरण का जो स्वर देखने को मिलता है वह अपने आप में अद्वितीय हैं। छायावादी कवियों में सबसे प्रमुख एवं वरिष्ठ कवि हैं जयशंकर प्रसाद। अतः उनपर यह जिम्मेदारी और भी अधिक थी जिससे यह कहा जा सके कि छायावादी कवियों की रचनाएँ भी राष्ट्रीय चेतना से ओतप्रोत थी एवं तत्कालीन संघर्ष में साहित्यकारों का भी सहयोग आंदोलनकारियों तथा स्वतंत्रता के आकांक्षियों को मिल रहा था।

परिचय
छायावादी युग के समय जिस राष्ट्रीय आंदोलन की शुरुआत हुई उसका स्वरूप पूर्व के आंदोलनों से बहुत ही अधिक भिन्न था। यद्यपि भारत पिछले 900 वर्षों से गुलाम था तथा इसमें कोई शक नहीं है कि मुसलमानों ने भारतीय धर्म एवं संस्कृति को नष्ट करने का भरसक प्रयास किया था तथापि अंग्रेजों ने भारत को बहुत भारी नुकसान पहुँचाया। अंग्रेज न सिर्फ देश को लूट रहे थे बल्कि शिक्षा, संस्कृति, एकता आत्मसम्मान, धर्म आदि सभी को नुकसान पहुँचा कर अंदर से खोखला कर रहे थे। जिससे वे हम भारतीयों को आर्थिक गुलाम के साथ–साथ मानसिक गुलाम भी बना सके। जब देश के प्रबुद्ध लोगों को इसकी भनक लगी तो देश में अंग्रेजों के प्रति विरोध प्रारंभ हो गया तथा जब इस विरोध की आग जनता तक पहुँचने लगी तो इसका स्वरूप विराट हो गया और इसने जन आंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर लिया।
साहित्य समाज का दर्पण होता है। अतः समाज में होने वाली इन घटनाओं का प्रभाव भी साहित्य पर व्यापक रूप में पड़ा अथवा यह कहा जाए कि इस आंदोलन को प्रभावी बनाने का कार्य साहित्यकारों ने ही किया तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। हिंदी साहित्य की दृष्टि से यह काल छायावादी कवियों का था तथा छायावादी कवियों में जयशंकर प्रसाद भारतीय संस्कृति के पोषक एवं उद्गाता के रूप में अग्रणी माने जाते हैं। प्रसाद जी का काव्य भारतीय संस्कृति की आधारशिला पर स्थापित है जो राष्ट्रीय चेतना एवं राष्ट्रीय जागरण के स्वरों से ओतप्रोत है। प्रसाद जी का इतिहास ज्ञान किसी से छिपा हुआ नहीं है। उनके इतिहास ज्ञान को हम उनकी विभिन्न रचना विधाओं जैसे – कहानी, नाटक, एकांकी, उपन्यास, कविता, महाकाव्य आदि में भली–भाँति देख सकते हैं। प्रसाद जी की राष्ट्रीय चेतना को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से विस्तार पूर्वक समझा जा सकता है :

१. भारत के स्वरूप का वर्णन : किसी भी स्वाधीनता आंदोलनकारी के लिए सर्वप्रथम यह आवश्यक है कि जिस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह युद्ध कर रहा है उसे हमेशा लक्ष्य का ध्यान रहे। इस उद्देश्य को ध्यान में रखकर प्रसाद जी ने भारत माता का बड़ा ही अद्भुत और मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है जिसमें प्रकृति की शोभा के साथ–साथ अतीत के गौरवमयी इतिहास का भी वर्णन है। यह इतिहास बोध और भारत माता की अनुपम मनोरम छवि स्वतंत्रता सेनानियों में स्फूर्ति का संचार करती हैं। कवि भारत माता के स्वरूप का वर्णन करते हुए लिखते हैं :

''अरुण यह मधुमय देश हमारा।
जहाँ पहुँच अनजान क्षितिज को मिलता एक सहारा।
सरस तामरस गर्भ विभा पर–नाच रही तरु शिखा मनोहर।
छिटका जीवन हरियाली पर–मंगल कुंकुम सारा।
लघु सुरधनु–से पंख पसारे–शीतल मलय समीर सहारे।
उड़ते खग जिस ओर मुँह किये–समझ नीड़ निज प्यारा।
बरसाती आँखों के बादल–बनते जहाँ भरे करुणा जल।
लहरें टकराती अनंत की–पाकर जहाँ किनारा।

हेम कुंभ ले ऊषा सवेरे–भरती ढुलकाती सुख मेरे।
मंदिर ऊँघते रहते जब–जगकर रजनी भर तारा।''१

२. मातृभूमि की महत्ता का बोध : प्रसाद जी देशवासियों को सदैव इस बात का स्मरण कराते रहते हैं कि वह युद्ध अंततः कर किसके लिए रहे हैं? व्यक्ति, विचार, संगठन अथवा स्वयं के लिए? प्रसाद जी कहते है यह युद्ध किसी व्यक्ति, विचार, पार्टी या स्वयं के लिए न होकर मातृभूमि के लिए है। वही मातृभूमि जिस पर खेल खेलकर हम बड़े हुए हैं, जो हमारी दूसरी माँ है। यह युद्ध इसी मातृभूमि के लिए है। इतिहास में जितने भी युद्ध हुए हैं उनमें से अधिकतर मातृभूमि की रक्षा के लिए ही हुए हैं चाहे वह पृथ्वीराज चौहान हो, महाराणा प्रताप हो, महाराणा सांगा हो या शिवाजी हो, सभी ने मातृभूमि की रक्षा के लिए ही युद्ध किया है। अतः मातृभूमि से बढ़कर इस संसार में और कोई नहीं है। वे लिखते हैं :

''वही है रक्त, वही है देश, वही है साहस, वैसा ज्ञान ।
वही है शांति, वही है शक्ति, वही हम दिव्य आर्य–संतान ।।''२

३. अतीत के गौरव का स्मरण : अंग्रेज प्रारंभ में भारत आये तो थे व्यापार करने पर यहाँ की परिस्थितियों का लाभ उठाकर यहाँ के स्वामी बन गए। उसके बाद उन्होंने भारत को न सिर्फ आर्थिक रूप से लूटा बल्कि उन्होंने शिक्षा नीति को भी ध्वस्त कर दिया। तथा तरह–तरह के हथकंडे अपनाकर भारतीय जनता के मन में हीन भावना का बीज बोया। परिणाम स्वरूप भारतीय अपने गौरवशाली अतीत को भुलाकर अपने वर्तमान से हताश और निराश होकर वास्तव में हीनता का अनुभव करने लगे। तब प्रसाद जी ने ऐतिहासिक तथ्यों एवं घटनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से स्वर प्रदान किया। प्रसाद जी ने देश की जनता को बताया कि समस्त संसार में कभी भारत ही ज्ञान के केंद्र के रूप में स्थापित था। हमने ही ज्ञान के प्रकाश से पूरे विश्व को आलोकित किया है। यह समस्त संसार हमारा ही ऋणी है। फिर तुम किस के गुलाम बने हुए हो? प्रसाद जी की कविता के परिणाम स्वरुप सदियों से सोई जनता ने अपने गौरवशाली इतिहास का पुनः आभास किया एवं नई उर्जा से स्वतंत्रता संग्राम में अपनी सहभागिता प्रदान की। कवि लिखते हैं :

''हिमालय के आँगन में उसे, प्रथम किरणों का दे उपहार।
ऊषा ने हँसकर अभिनंदन किया, और पहनाया हीरक हार।।

जगे हम, लगे जगाने विश्व, लोक में फैला फिर आलोक।
व्योम–तम–पुंज हुआ तब नष्ट, अखिल संसृति हो उठी
अशोक।।''३

४. प्रकृति के माध्यम से जागरण संदेश : छायावादी कवियों के राष्ट्र जागरण का स्वर औरों से भिन्न ही है तभी तो कवि कहीं अतीत का उदाहरण देकर जनता को जागृत करते हैं तो कहीं रक्त में उबाल उत्पन्न करके। छायावादी कवियों ने राष्ट्र जागरण की एक पद्धति विकसित की है वह है प्रकृति के अवलंबों का आश्रय। इस प्रकार की कविताओं में भले ही कवि ने प्रकृति को अवलंब बनाया है परंतु उसका मूल स्वर स्वतंत्रता का ही है। कवि वर्षों से सोई हुई जनता को जागृत करते हुए कहते हैं :

''बीती विभावरी जाग री!
अम्बर पनघट में डुबो रही
तारा–घट ऊषा नागरी।
खग–कुल कुल–कुल–सा बोल रहा,
किसलय का अंचल डोल रहा।
लो, यह लतिका भी भर लायी
मधु मुकुल नवल रस–गागरी।
अधरों में राग अमंद पिये,
अलकों में मलयज बंद किये,
तू अब तक सोयी है आली!
आँखों में भरे विहाग री!''४

५. सांस्कृतिक एकता का बोध : भारत देश पहले से ही अनेक जातियों में बँटा हुआ था, फिर मुसलमानों के आगमन से हमारी संस्कृति एवं सभ्यता को गहरी चोट लगी। जब हम इन सब से उबर ही रहे थे तभी अंग्रेज आ गए और अपने साथ फूट डालो और शासन करो की नीति लाएँ। तथा उन्होंने उत्तर भारतीय और दक्षिण भारतीयों को आर्य एवं द्रविड़ में बाँटने का असफल प्रयास किया। लेकिन प्रसाद जी जैसे सचेत कवियों ने इस तथ्य का जमकर प्रतिकार किया तथा आर्य–द्रविड़ के भ्रामक सिद्धांत को प्रमाणों के साथ धराशाई कर दिया। कवि लिखते हैं :

''किसी का हमने छीना नहीं, प्रकृति का रहा पालना यहीं।
हमारी जन्मभूमि थी यहीं, कहीं से हम आये थे नहीं।।''५

६. नेतृत्व शक्ति का विकास : किसी भी कार्य को सफल बनाने के लिए संगठन की आवश्यकता होती हैं, परंतु उस संगठन एवं समूह को दिशा देने के लिए आवश्यकता होती है एक कुशल नेतृत्वकर्ता की। बिना नेतृत्वकर्ता के आंदोलन का ना तो कोई स्वरूप होता है ना कोई दिशा। इस तथ्य से प्रसाद जी भली–भाँति परिचित थे। तत्कालीन समाज में लोग जागरुक तो हो रहे थे परंतु नेतृत्वकर्ता के अभाव में उनकी शक्ति का सदुपयोग नहीं हो पा रहा था। अतः प्रसाद जी ने जनता में नेतृत्व शक्ति के विकास के लिए अनेक रचनाएँ लिखी। वे युवा वर्ग से महाराणा प्रताप, शिवाजी जैसे वीरों की भाँति नेतृत्वकर्ता बनने की कामना करते हैं। वे युवा वर्ग की अंतरात्मा को झकझोरते हुए प्रश्न करते हैं। वे लिखते हैं :

''कौन लेगा भार यह?
जीवित है कौन?
साँस चलती है किसकी
कहता है कौन ऊँची छाती कर, मैं हूँ–
मैं हूँ–मेवाड़ में,
अरावली श्रृंग–सा समुन्नत सिर किस का?
बोलो, कोई बोलो–अरे क्या तुम सब मृत हो?''६

७. स्वतंत्रता का आह्वान : छायावादी कविताओं में जहाँ कवि का कोमलतम रूप देखने को मिलता है वहीं जब कवि राष्ट्र के युवाओं से स्वतंत्रता के लिए कमर कसने का आह्वान करते हैं तो कवि के स्वर में परिवर्तन स्पष्ट दृष्टिगत होता है। कवि की वाणी में ऐसा व्यंग एवं प्रहार है जो पाठक को स्वतंत्रता के लिए ललकारती सी प्रतीत होती हैं। यदि ऐसी कविता पढ़कर भी किसी पाठक की रक्त में उबाल न आये तो उसे भारतीय(स्वतंत्रता का अभिलाषी) कहलाने का कोई अधिकार नहीं है। कवि लिखते हैं :

''क्या सुना नहीं कुछ, अभी पड़े सोते हो।
क्यों निज स्वतंत्रता की लज्जा खोते हो।।
प्रतिहिंसा का विष तुम्हें नहीं चढ़ता क्या।
इतने शीतल हो वेग नहीं चढ़ता क्या।।
जब दर्प बढ़ा अरि चढ़ा चला आता है।
तब भी तुममें आवेश नहीं आता है।।''७

८. सकारात्मक ऊर्जा का संचारः संग्राम के लिए सबसे आवश्यक तत्व है सकारात्मक ऊर्जा एवं विजय की आशा। प्रसाद जी ने स्वाधीनता के पुजारियों को संबोधित करते हुए एवं भारत माता के आशीर्वचनों को सुनाते हुए कविता लिखी जो स्वतंत्रता आंदोलनों में तो खूब गाया ही गया आज भी कई मंचों पर गुनगुनाया जाता है। इस कविता में प्रसाद जी की स्वाधीनता की उत्कंठा स्पष्ट झलक रही है। कवि लिखते हैं :

''हिमाद्रि तुंग श्रृंग से
प्रबुद्ध शुद्ध भारती–
स्वयंप्रभा समुज्जवला
स्वतंत्रता पुकारती–
अमर्त्य वीर पुत्र हो, दृढ़–प्रतिज्ञ सोच लो
प्रशस्त पुण्य पंथ है – बढ़े चलो, बढ़े चलो
असंख्य कीर्ति–रश्मियाँ
विकीर्ण दिव्य दाह–सी।
सपूत मातृभूमि के –
रुको न शूर साहसी
अराति सैन्य सिंधु में – सुबाड़वाग्नि–से जलो।
प्रवीर हो जयी – बनो बढ़े, चलो बढ़े चलो।।''८

निष्कर्ष

जयशंकर प्रसाद के काव्य का सिंहावलोकन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि उनकी कविताओं में राष्ट्रीयता का स्वर विद्यमान है और केवल विद्यमान ही नहीं है अपितु उसकी अभिव्यक्ति भी सशक्त रूप में हुई है। हाँ, यह अवश्य है कि उनकी कविताओं में मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, रामधारी सिंह दिनकर जैसे कवियों की भाँति स्पष्टता नहीं है परंतु हमें इस तथ्य को भी नहीं भुलाना चाहिए कि प्रत्येक कवि की अभिव्यक्ति शैली एवं रचना शैली भिन्न होती है। वास्तव में कालजयी रचनाकार एवं कालजयी रचना वही होती है जिसमें समग्रता के साथ–साथ अतीत की गहराई, वर्तमान का सत्य तथा सार्थक भविष्य की कल्पना हो। यदि हम प्रसाद को कालजई रचनाकार मानते हैं तो हमें उनके राष्ट्रीयता के स्वर को भी खुले ह्रदय से स्वीकार करना चाहिए। लेकिन फिर भी समग्र दृष्टिकोण के आधार पर उन्हें छायावादी कवि ही कहना या मानना सर्वोचित होगा।

संदर्भ सूची

1. चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–83–84
2. स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१४१
3. वही
4. बीती विभावरी जाग री, लहर, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–३३
5. स्कंदगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१४१
6. पेशोला की प्रतिध्वनि, लहर, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–६६
7. जनमजेय का नागयज्ञ, जयशंकर प्रसाद, सं० डॉ० दिनेश्वर प्रसाद, पृष्ट–८२
8. चंद्रगुप्त, जयशंकर प्रसाद, पृष्ट–१६३